ग्रामीण महिलाओं के बदलते सामाजिक मूल्य एवं आकांक्षाएं

(अम्बेडकर नगर जनपद की 300 ग्रामीण महिलाओं पर आधारित एक अध्ययन)

– रुपे"ा कुमार श्रीवास्तव

ग्रामीण महिलाओं के बदलते सामाजिक मूल्य एवं आकांक्षाओं पर दृष्टिपात करें तो ज्ञात होता है, कि आज उनके सामाजिक मूल्य एवं आकांक्षाएँ तेजी से परिवर्तित हो रही है। ऐसी लगभग 68 प्रति"ात महिलाओं की प्रतिक्रिया है। आज की महिलाएँ अपने पुराने परम्परागत व्यवसायों को छोड़ रही हैं, क्योंकि उसमें वे अपनी परिस्थिति में सुधार नहीं ला सकती हैं। आज उन्हें अपनी महत्ता समझ में आने लगी है। सच ही है, कि बिना ग्रामीण महिलाओं के उत्थान के भारत या कोई भी दे"ा सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक क्षेत्र में पूर्ण प्रगति को नहीं प्राप्त कर सकता। महिलाओं को ज्ञात हो रहा है, कि बिना ि"ाक्षा के वे सामाजिक मूल्यों को नहीं समझ पायेंगी। अतः ि"ाक्षित होने की दि"ाा में वे तेजी से कदम बढ़ा रही हैं। सरकार भी इसका पूर्ण सहयोग कर रही है। सरकार ने ग्रामीणांचल में प्रौढ़–ि"ाक्षा कार्यक्रम को बढ़ावा दिया तथा रात्रि विद्यालयों की भी स्थापना की। बच्चों की ि"ाक्षा हेतु सर्व–ि"ाक्षा अभियान चलाया जा रहा है। स्त्रियाँ भी ि"ाक्षा के माध्यम से अपने में व्याप्त संकीर्ण मानसिकता को दूर कर रही हैं। घर की आर्थिक स्थिति को ठीक करने हेतु वे उद्योगों में कार्य भी करने लगी हैं। उनकी रूढ़िगत मनोवृतियाँ भी काफी हद तक कम हो रही हैं।

सम्पूर्ण अध्ययन की अवधि में अन्वेषक ने यह पाया कि किसी भी बिन्दु पर सकारात्मक उत्तर देने वाली शहर से दूर स्थित गाँव की महिलाओं की अपेक्षा शहर के निकट स्थित गाँव की महिलाओं की संख्या अधिक है, क्योंकि संचार, यातायात के साधन, नगरीकरण एवं औद्योगीकरण से वे अधिक प्रभावित होती हैं। इस आधार पर यह कहा जा सकता है, कि दूरस्थ गाँव की अपेक्षा नगर के समीप गाँव की महिलाएँ ज्यादा जागरूक हैं।

प्रत्येक गाँव की महिलाओं के अन्दर यह भावना रहती है, कि उनकी सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक प्रस्थिति उच्च हो। वे अच्छी तरह खा–पी, पहन–ओढ़ सकें परिवार के सभी लोग सुख पूर्वक जीवन यापन करें, उनके गाँव का भी विकास हो तथा हर आव"यकता की चीजें गाँव में ही उपलब्ध हो। गाँवों में प्रौढ़–ि"ाक्षा का प्रसार हो एवं

उद्योगों की स्थापना हो, जिससे की ग्रामीण महिलाओं को भी रोजगार उपलब्ध हो सके और वे घर की देख भाल के साथ–साथ कुछ अर्थोपार्जन कर, अपनी व अपने घर की आर्थिक स्थिति को उच्च कर सकें। ग्रामीण महिलाओं में ि"ाक्षा का प्रसार कर उनके अन्दर की चेतना को जागृत किया जाय, क्योंकि जिस गाँव की महिलाएँ ि"ाक्षित होगीं, वही गाँव विकास की ओर उन्मुख होगा एवं हो रहा है। ि"ाक्षित महिलाएँ ही आधुनिक युग में पुरूषों के समानान्तर आ सकती हैं।

निद"र्ा–

इस अध्ययन के लिए पूर्वी उत्तर प्रदे"ा के अम्बेडकर नगर जनपद के तीन गाँवों– पंथीपुर, नासिरपुर और बहोरीपुर से 100–100 उत्तरदात्रियों का चयन साधारण निद"र्न विधि से किया गया है। इस प्रकार कुल 300 उत्तरदात्रियों का चयन किया गया। अध्ययन का मुख्य उद्दे"य ग्रामीण महिलाओं के बदलते सामाजिक मूल्य एवं आकांक्षाओं को समझाना रहा है।

प्राथमिक तथ्य संकलन की प्रविधि–

प्रस्तुत अध्ययन में प्राथमिक तथ्यों के संकलन के लिए साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया है।

स्वतन्त्र चर–

(1) क्षिक्षा, (2) आय स्रोत, (3) आयु

आश्रित रा"ियाँ–

(1) मूल्यों के प्रति दृष्टिकोण (2) आकांक्षाएँ

सारणी संख्या : 8.01

बदलत सामाजिक मूल्य एवं अकांक्षाओं के प्रति उत्तरदात्रियों की प्रतिक्रिया

क्रम सं0	प्रतिक्रिया	आवृत्ति	प्रति"ातता
1.	हाँ	205	68.33
2.	नहीं	95	31.67
योग–		300	100.00

सारणी संख्या 8.01 में प्रदर्शित आँकड़ों को देखने से ज्ञात होता है कि आज 68.33 प्रतिशत महिलाओं की अकांक्षाएँ एवं मूल्य अर्थात पुरानी मान्यताएँ समाप्त सी होती जा रही हैं। पुराने समय में महिलाओं की जो भी अकांक्षाएँ एवं मूल्य थे, वे आज नगरीकरण, औद्योगीकरण, शिक्षा के प्रचार–प्रसार, यातायात के साधनों, संचार के साधनों के कारण परिवर्तित हो रही हैं। आज की ग्रामीण महिलाएँ पुरानी परम्पराओं, रीत–रिवाजों एवं रुढ़ियों का विरोध करती हैं। उनकी अकांक्षाएँ जोकि मृत्यप्राय हो चुकी थीं, आज खुली हवाओं में साँस लेने को उतावली हो रही हैं। आज की नारी अपनी इच्छाओं के अनुरुप कार्य को चुन सकने में सक्षम हैं। उसे घर परिवार का सहयोग भी मिल रहा है। केवल वे घर जहाँ आज भी प्रथाओं, रुढ़ियों, परम्पराओं को मानना होता है, वहीं की महिलाओं में परिर्वतन होना बाकी है। महिलाओं की अकांक्षाओं की दिशा के बारे में जानने हेतु अगली सारणी का अवलोकन किया।

क्रम सं0	**आकांक्षाओं की दिशाएं / क्षेत्र**	**आवृत्ति**	**प्रतिशतता**
1.	घरेलू कार्य	42	20.49
2.	व्यापार	41	20.00
3.	नौकरी	93	45.37
4.	राजनीति	29	14.14
	योग–	205	100.00

उपरोक्त सारणी के अवलोकन से मालूम होता है, कि ग्रामीण समाज की सबसे ज्यादा 93 (45.37 प्रतिशत) महिलाएं नौकरी करने की चाह रखती हैं। सरकार द्वारा चलाये गये, आँगनबाड़ी, शिक्षामित्र एवं सेविका के पदों पर आज महिलाएँ नौकरी कर रही हैं। फिर भी 20.49 प्रतिशत महिलाएँ घरेलू कार्यों में लिप्त हैं। वे कुछ करना तो चाहती हैं, परन्तु रीति–रिवाजों, प्रथाओं, परम्पराओं आदि के कारण अपनी इच्छा का दमन कर रहीं हैं या फिर वे ज्यादा पढ़ी–लिखी नहीं हैं। 20 प्रतिशत महिलाएँ वे है जो सामान्य शिक्षित हैं तथा

घर में ही दुकान चला कर अपना जीवन यापन एवं घर की आर्थिक स्थिति में सहयोग करना चाहती हैं।

अत्यधिक जागरुक एवं समाज सेवा की भावनाओं से ओत–प्रोत 14.14 प्रति"ात महिलाएँ राजनीति में आने का विचार व्यक्त करती हैं।

उपरोक्त के तुलनात्मक अध्ययन के उपरान्त ज्ञात होता है, कि ग्रामीण समाज की महिलाओं की अपनी भी इच्छाएँ होती हैं। परन्तु घर वालों की इच्छाओं के आगे वे अपनी इच्छाओं को दमन कर लेती हैं, जिसका प्रमुख कारण पुरानी परम्पराओं एवं रीत–रिवाजों के प्रति आटूट लगाव होता है, परन्तु आज ऐसी महिलाओं की प्रति"ातता में धीरे–धीरे कमी आ रही है। आज अधिकाँ"ा ग्रामीण महिलाएँ अपनी आकांक्षाओं के अनुरूप व्यापार, नौकरी या राजनीति में प्रवे"ा कर रही हैं।

सारणी संख्या : 8.02

सामाजिक मूल्यों को समझने हेतु ि"ाक्षा की आव"यकता के प्रति उत्तरदात्रियों की प्रतिक्रिया

क्रम सं0	ि"ाक्षा	हाँ	वर्ग प्रति"ात	नहीं	वर्ग प्रति"ात	योग
1.	उच्च ि"ाक्षित	81	100	00	00.00	81
2.	सामान्य ि"ाक्षित	126	100	00	00.00	126
3.	अि"ाक्षित	93	100	00	00.00	93
योग–		300		00	00.00	300
सम्पूर्ण प्रति"ात–		100		00		100

सारणी संख्या 8.02 में प्रदर्ि"ात आँकड़ों को देखने से ज्ञात होता है कि हमारे सम्पूर्ण निद"ार्ा की महिलाएँ ि"ाक्षा की आव"यकता पर बल देती हैं। इनका कहना है, कि ि"ाक्षित होकर ही सामाजिक मूल्यों को अधिक बेहतर तरह से समझा जा सकता है।

वर्ग प्रति"ातता के आँकड़ों को देखने से ज्ञात होता है, कि सभी शैक्षिक वर्गों की महिलाएँ, ि"ाक्षा की महत्ता को स्वीकार करती हैं।

उपर्युक्त के आधार पर हम कह सकते हैं, कि समाज में निहित मूल्यों को समझने हेतु प्रत्येक महिला को ि"क्षित होना आव"यक है, क्योंकि ि"क्षा ही ज्ञान के द्वारा खोल सकती है। इसका समर्थन सभी शैक्षिक स्तर की महिलाएँ करती है।

सारणी संख्या : 8.03

ि"क्षा द्वारा मानसिक संकीर्णता की सामाप्ति के प्रति उत्तरदात्रियों के प्रतिक्रिया

क्रम सं0	ि"क्षा	हाँ	वर्ग प्रति"ात	नहीं	वर्ग प्रति"ात	योग
1.	उच्चि"क्षित	81	100.00	00	00.00	81
2.	सामान्य ि"क्षित	121	96.03	05	03.97	126
3.	अि"क्षित	73	78.49	20	21.51	93
योग–		275		25		300
सम्पूर्ण प्रति"ात–		91.67		08.33		100

सारणी संख्या 8.03 में प्रति"ात आँकड़ों को देखने से ज्ञात होता हैं कि हमारे सम्पूर्ण निद"र्ा में से 91.67 प्रति"ात महिलाएँ मानती हैं कि ि"क्षा द्वारा ही उनकी मानसिक संकीर्णता दूर हुई है। जबकि 8.33 प्रति"ात महिलाएँ उक्त बिन्दु पर नकारात्मक विचार व्यक्त करती हैं।

वर्ग प्रति"ातता के आँकड़ों को देखने से ज्ञात होता है कि 100 प्रति"ात उच्च ि"क्षित, 96.03 प्रति"ात सामान्य ि"क्षित तथा 78.49 प्रति"ात अि"क्षित महिलाएँ स्वीकार करती हैं कि ि"क्षा द्वारा उनकी मानसिक संकीर्णता दूर हुयी है। दूसरी ओर 3.97 प्रति"ात सामान्य ि"क्षित तथा 21.51 प्रति"ात अि"क्षित महिलाएँ उक्त बिन्दु पर नकारात्मक विचार व्यक्त करती हैं।

उपरोक्त के तुलनात्मक अध्ययन से ज्ञात होता है कि ि"क्षा ही एक ऐसा अस्त्र है, जिसके द्वारा ग्रामीण समाज की महिलाओं की संकुचित मानसिकता को दूर किया जा सकता है। इसको अधिकां"ा उत्तरदात्रियों ने स्वीकार किया है।

चूँकि नकारात्मक प्रति"ातता कम है। अतः हम कह सकते हैं, ''ि"ाक्षा के द्वारा ही ग्रामीण महिलाओं में संकीर्ण मानसिकता दूर हो रही है।''

सारणी संख्या : 8.04

उद्योगों में कार्य करने के प्रति उत्तरदात्रियों की प्रतिक्रिया

क्रम सं0	आय श्रोत	हाँ	वर्ग प्रति"ात	नहीं	वर्ग प्रति"ात	योग
1.	नौकरी	51	70.83	21	29.17	72
2.	व्यापार	39	72.22	15	27.78	54
3.	कृषि	59	58.42	42	41.58	101
4.	मजदूरी	61	83.56	12	16.44	73
योग–		210		90		300
सम्पूर्ण प्रति"ात–		70		30		100

$X^2=20.3248,$ $df=3,$ $p=0.05,$ >

सारणी संख्या 8.04 में प्रदर्ि"ात आँकड़ों को देखने से परिलक्षित होता है कि 70 प्रति"ात उत्तरदात्रियाँ उद्योगों में कार्य करने को इच्छुक हैं तथा कार्य करके अपने घर की आर्थिक स्थिति को सुधारने का प्रयास करना चाहती हैं। दूसरी ओर 30 प्रति"ात महिलाएँ उद्योगों में, आर्थिक शोषण तथा कभी–कभी मानसिक व शारीरिक शोषण हो जाने के कारण कार्य करने को उचित नहीं मानती है।

वर्ग प्रति"ातता के आँकड़ों को देखें तो ज्ञात होता हैं कि 70.83 प्रति"ात नौकरी द्वारा आय स्रोत वाली, 72.22 प्रति"ात व्यापार द्वारा आय स्रोत वाली, 58.42 प्रति"ात कृषि करने वाली तथा 83.56 प्रति"ात, मजदूरी द्वारा आय स्रोत वाली महिलाएँ उद्योगों में कार्य करने को उचित ठहराती हैं। दूसरी ओर 29.17 प्रति"ात नौकरी द्वारा आय स्रोत वाली, 27. 78 प्रति"ात व्यापार द्वारा आय स्रोत वाली, 41.58 प्रति"ात खेती करने वाली तथा 16.44

प्रति"ात मजदूरी द्वारा आय स्रोत वाली महिलाएँ, उद्योगों में कार्य करने को उचित नहीं ठहराती हैं। इनका कहना है, कि उद्योगपति काम के मुताबिक पैसा नहीं देते हैं।

क्षेत्रीय आँकड़ों की सार्थकता की जाँच हेतु निकाले गये x^2 का मान 20.3248, 3(df) स्वतंत्रता के अं"ा तथा 0.05 सार्थकता के स्तर पर x^2 के *table value* 7.815 से अधिक होने के कारण हमारी शून्य प्राक्कल्पना निरस्त हो जाती है। हमारे आँकड़े सार्थक है और इस आधार पर हम कह सकते हैं, कि अन्य व्यावसायिक स्थितियों की महिलाओं की अपेक्षा, मजदूरी करने वाली महिलाएँ, उद्योगों में कार्य करने के प्रति सर्वाधिक मत (83.56 प्रति"ात) रखती हैं।

उपरोक्त के तुलनात्मक अध्ययन से ज्ञात होता है, कि ग्रामीण महिलाएँ उद्योगों में कार्य करने हेतु इच्छुक हैं एवं बहुत सी महिलाएँ कार्य भी कर रही हैं। आज मजदूरों एवं मिल मालिकों के मध्य पहले जैसी स्थिति नहीं रही। अब मिल मालिक भी मजदूरों की परवाह करते हैं। मजदूरों के लिए पें"ान योजना भी चलायी जाने लगी है।

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1. कपिल, एस. के., सांख्यिकी के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 1988
2. श्रीवास्तवा, उषा, ग्रामीण महिलाओं की सामाजिक आर्थिक स्थित (अप्रकां"ात शोध–प्रबन्ध), 1989
3. कल्याण : नारी अंक 1945, पी–422
4. मिश्र, डॉ0के0के0, समाजिक परिवर्तन, भवदीय प्रका"ान फैजाबाद
5. दुबे, एम0सी0 : इण्डियाज चेजिंग विपेज
6. मूरे, डब्लू0ई0 : सो"ाल चेन्ज
7. कुक एण्ड जहोदा : रिसर्च मैथड्स इन सो"ाल रिले"ान्स